आज कि मुरली का सहज सार ---------- Date:23-08-14

सत्य स्वरूप, ज्ञानसागर बाप ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - योग द्वारा तत्वों को पावन बनाने की सेवा करो क्योंकि जब तत्व पावन बनेंगे तब इस सृष्टि पर देवतायें पाँव रखेंगे.

आज कि मुरली में सत्य स्वरूप बाप ने कई सत्य हकीकतें कही है जो अभी भी ज्ञान मार्ग में आने के बाद भी हमने नहीं समझी थी. जैसे कि आज भी बाबा आते है तो कई बच्चों को होता है कि बाबा मेरे सिर पर हाथ रखे या बाबा मुझे भाखी पहने. लेकिन बाबा ने आज बहुत स्पष्ट कहा कि भले हम अभी ज्ञानी बने है और हमारी आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करते है लेकिन फिर भी हमारा शरीर तो भ्रष्टाचार से ही पैदा हुआ है और पतित ही रहता है. इसलिए हमारी जो कामनाएँ है कि बाबा मेरे सिर पर हाथ रखे या बाबा मुझे भाखी पहने, ये भी एक प्रकार से हमारे में देह-अभिमान का विकार है जो हम अपने विकारी देह को परमात्मा, जो संपूर्ण पावन है, वह टंच करें ऐसी इच्छा रखते है.

- सबसे पहली हकीकत बाबा ने बताई की यह पुरानी दुनिया विकारी है और यहाँ किसी भी आत्मा को शांति मिल नहीं सकती. शांति कि दुनिया है हम सब आत्माओं का घर शांतिधाम और फिर इस धरती पर शांति होती है सतयुग में. सतयुग में सुख और शांति दोनों है.

- दूसरी हकीकत बाबा ने बताई कि हम बेहद के बाप के बच्चे तो बन गये और बाप के बच्चे बनने से हमें बाप से पुरा वर्षा तो मिल गया. लेकिन अभी हमें पुरुषार्थ कर अपनी आत्मा को संपूर्ण पवित्र गुणवान यहाँ बनाना है. नहीं तो बहुत

सजायें खानी पड़ेगी. बाबा ने स्पष्ट कहा बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, हिसाब-किताब चुक्तु कराने वाला.

- तीसरी हकीकत बाबा ने बताई कि जो आत्माये इस ईश्वरीय ज्ञान को जल्दी से समझ लेती है उन्होंने ही भक्ति जास्ती कि है और वही आगे नम्बर में भी आयेंगे.

- चौथी हकीकत बाप के बताई कि ध्यान में जाकर, सतयुग या सूक्ष्मवतन का साक्षात्कार करने से आत्मा पावन नहीं बनती. आत्मा को पावन बनाने के लिए अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और कोई बात नहीं.

- पाँचवीं हकीकत बाप ने बताई कि हम भले अभी ज्ञानी बने है और बाप को याद कर हमारी आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करते है. फिर भी हमारा शरीर तो विकारों से पैदा हुआ है और आत्मा शरीर छोड़ने तक शरीर विकारी रहता है. इस लिए आत्मा जब तक इस विकारी शरीर में रहकर पावन बनने का पुरुषार्थ भले करती हो लेकिन इस शरीर से किसी भी प्रकार का सुख लेने का ख्याल मात्र भी आत्मा को न आये.

- छठी हकीकत बाप ने बताई कि अभी हम आत्माये पुरुषार्थ कर जब संपूर्ण पावन बन जाती है तो यह प्रकृति भी परिवर्तन हो जाती है क्योंकि प्रकृति, पुरुष (यानी आत्मा) को फोलों करती है. फिर सतयुग में हमें शरीर भी पावन मिलेगा.

- सातवीं हकीकत बाप ने बताई कि कई बच्चे हमारी तक़दीर में होगा तो हम पुरुषार्थ कर लेंगे ऐसा सोचकर के पुरुषार्थ को तक़दीर पर छोड देते है. लेकिन असूल में हमारे अभी के पुरुषार्थ के आधार पर ही हमारी प्रालब्ध (यानी तक़दीर) बननी है. तो हमें बीस नाखुंनो का जोर लगाकर पुरुषार्थ पूरा करना है, जो सारे कल्प के लिए हमारी प्रालब्ध श्रेष्ठ बन जायें. ॐ शांति.